ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-1; Issue-5 (Oct.-Dec.) 2024
Page No.- 62-70
©2024 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

डॉ. राधा कुमारी
वरीय सहायक प्राध्यापिका,
मैथिली विभाग,
पूर्णियाँ महिला महाविद्यालय,
पूर्णियाँ, बिहार-854301.

Corresponding Author :

डॉ. राधा कुमारी
वरीय सहायक प्राध्यापिका,
मैथिली विभाग,
पूर्णियाँ महिला महाविद्यालय,
पूर्णियाँ, बिहार-854301.

साहित्यिक मनोविश्लेष्णात्मक निबंध संचयन : 'अनुशीलन'

परिचय : साहित्य कैँ समाजक दर्पण कहल जाईछ आओर साहित्य रचनाकारक व्यक्तित्व प्रतिबिम्ब सेहो होईछ। अपन सामाजिक आ व्यक्तिगत जीवन मे कथा लेखिकाकेँ किछु सिखबाक अवसर भेटलनि। एहि प्रशिक्षण क्रममे समाजक नित्य घटित विभिन्न मानसिकता पर लिखबाक लेल प्रेरित भेलीह लेखिका पन्ना झा। लेखिकाक ई निबंध -संग्रह **'अनुशीलन'** मे समाजक संकीर्ण मानसिकता पर प्रहार भेल अछि। एहिमे स्त्री शिक्षा आ नारी सशक्तिकरण पर जोर देल गेल अछि। लेखिका पन्ना झा स्वयं दू आखरमे लिखने छथि "बहुत रास एहन विषय अछि जाहिपर हम दैनिक जीवन मे चर्चा त करैत छी, नित्य घटित होयबला घटनासँ पीड़ित होईत छी, कष्ट भोगैत छी मुदा ओकर जड़ि तक जाय कारण ओ निदान तकबाक प्रयास नहि करैत छी।"[1] निबंधकारक एहि पंक्ति सँ एतबा त स्पष्ट होईत अछि जेँ एहि पोथीक अनुशीलन करबाक आवश्यकता अछि ।

दरभंगा जिलाक दुलारपुर ग्राम मे हिनक जन्म अप्रैल 1946 मे भेल छल। हिनक पिता स्व. शुभनारायण चौधरी आ पति श्री नरेंद्र झा छथि। बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुरसँ मनोविज्ञान मे प्रतिष्ठाक संग स्नातक एवं कलकत्ता विश्वविद्यालयसं वर्ष 1967 मे एम.ए. कएलनि। पटना विश्वविद्यालयसँ मनोविज्ञान मे पीएच .डी. कएलनि। हिनक कार्यवृति मगध विश्वविद्यालयक जे.डी. महिला महाविद्यालय, पटना मे स्नातकोत्तर मनोविज्ञानक प्राध्यापिका तथा विभागाध्यक्ष एवं वर्ष 2008 मे महाविद्यालय सँ सेवानिवृत भेलीह।

प्रकाशित कृतिः हिनक प्रकाशित कृति अंग्रेजी मे PSYCHO SOCIAL STRESS & SCHIZOPHRENIA (2003), **'अनुभूति'** कथा-संग्रह (2010) मैथिली मे **'अनुशीलन'** निबंध मैथिली मे 2012 मे छपल। लेखिका विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक संस्था मे सक्रिय सहयोगी रहलीह। एहि संग्रहक रचना के मुख्य रुपसं दू कोटि मे राखल गेल अछि। पहिल साहित्य -

विमर्श आ दोसर ज्ञान -विज्ञान धरि ओकर विस्तारक संकेत। हिनक ई निबंध -संग्रह मुख्य रुपसँ नारी लेखनसँ संबंधित अछि। दू आखरमे लेखिका कहैत छथि "समाज आ साहित्यिक एहन कोनो अंश छुटल नहि अछि जतय मनोविज्ञानक समावेश नहि अछि। तैं जँ मनोविज्ञानक दृष्टिसँ साहित्य आ समाजक अवलोकन कएल जाय त बेसी उपयुक्त होयत।"[2]

पन्ना झा द्वारा लिखित **'अनुशीलन'** पढ़लाक बाद ई स्वतः इच्छा जागृत भेल जे एहिपर एकटा समीक्षात्मक आलेख लिखल जाए। हिनक एहि निबंध – संग्रहमे अधिकांश नारी समस्यासँ अनुप्राणित अछि आओर लेखिका अपन मोनक बात एतेक सशक्तरु रुपसँ अपन लेखनीक माध्यमे रखलनि, जकरा पढ़ँला सँ पाठकलोकनि ओहि समस्या सभसँ अवगते टा नहि हेताह अपितु सोचबाक लेल बाध्य होमय पड़तनि।

विषय-वस्तु : अंतिका प्रकाशनसँ प्रकाशित **'अनुशीलन'** निबंधक पहिल संस्करण 2012 मे भेल। एकर भूमिका मोहन भारद्वाज लिखने छथि। एहि निबंध – संग्रहमे कुल सोलह गोट निबंध अछि। निबन्ध - संग्रहक पहिल निबंध **'साहित्य कियैक लिखल जाय'** मे मूल रुपसँ लेखिकाक मंतव्य छन्हि – "साहित्य भाषाक विकसित रूप अछि एहिमे मनुष्यक मनोभावक अभिव्यक्ति होइत अछि।"[3]

जहिना सभ्यताक विकास क्रमानुसार भेल ओहिना साहित्योक विकास क्रमानुसार भेल। साहित्ये एकमात्र एहन साधन होइत अछि जकर प्रकाशमे व्यक्ति आ सभ्यता विकसित भ' रहल अछि। दुनु विधाक उद्देश्य समाज ओ व्यक्तिक चित्रण, संगहि समाजक गुण – दोषक निरुपण। साहित्य – विमर्शमे लेखिका प्राचीन ग्रन्थ मनुस्मृतिक आदिकालक सामजिक व्यवस्था एवं ओकर परिवर्तन जानकारी दैत छथि जे ओहि समयमे मातृसत्तात्मक परिवार छल मुदा आस्ते – आस्ते किछु गोटे द्वारा अपन प्रभुताक बलैं पितृसत्तात्मक रुपमे परिवर्तित कएल गेल। मुख्य रुपसँ साहित्य लिखबामे कोनो ख़ास व्यक्ति, समय, परिवेशक विषयमे विचार व्यक्त होइत अछि। साहित्य ओ समाजमे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध अछि। साहित्य व्यक्ति आ व्यक्ति – साहित्य आ समाजक स्थापना करैत अछि। दुनु एक दोसरक बिना अपूर्ण होइत अछि। साहित्य लिखबाक सम्बन्धमे लेखिकाक तात्पर्य छन्हि –"ज्ञान – विज्ञानक विषय यथा – मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदिक अपन इतिहास अछि जे साहित्यक धरोहरक रुपमे सुरक्षित अछि। पूर्वक इतिहास ज्ञानसँ परिचित भेलाक बादे व्यक्ति आगुक विकास लेल प्रयत्नशील होइत अछि।"[4]

आजुक वैज्ञानिक युगमे समाचारपत्र, रेडियो, मोबाइल, दूरदर्शन आदि किछु क्षणिक लेल दुनियाक वस्तुस्थितिक ज्ञान द देत, मुदा ओकर संरक्षनक बादो ओ जनसुलभ नहि भ' पाओल अछि। हिनक कहबाक निचोड़ जे साहित्य रुपी समुद्रमे लाखो – करोड़ों वर्षक नीक बेजाय वस्तु – विषय धरोहरक रूपैं अटल पडल अछि। लेखिकाक मंतव्ये 'साहित्य कियैक लिखल जाए' ताहि संबंधमे उत्तर छन्हि जे "साहित्य – जन–जागरण, व्यक्तिक सामाजिक, सांस्कृतिक विकासक संग सृष्टिक संवाहक थिक तैं साहित्यक सृजन अति आवश्यक अछि। अंततः यैह कहल जाएत जे साहित्यसँ इतर किछु नहि अछि ने व्यक्ति, ने समाज। एकमात्र साहित्ये'क माध्यमसँ व्यक्ति अपन मोनक तीन स्तर – चेतन, अवचेतन, अचेनतक भावकैं कागजपर व्यक्त करैत अछि। साहित्य तँ बौद्धिक जीवनक विकासक स्रोत थीक जँ ई स्रोत विकसित नै होयत तँ विवेकी आ' ज्ञानी जनक ज्ञान पिपासाक पूर्ति कोना होयत?"[5]

हिनक दोसर निबंध **'प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे नारी'** मे मूल रुपसँ विश्वक प्रत्येक देशक महिला समस्याकँ सरकार ओ समाजक समक्ष उपस्थित कएल गेल अछि। गंभीर रुपसँ चिन्तन कएलापर सभ देशक स्त्रीक मांग मूल रुपँ एके बुझना

जाइछ। शक्तिशाली होयबाक कारण पुरुषलोकनि स्त्री जातिक शारीरिक ओ मानसिक शोषण करैत छथि। स्त्रीगणकेँ सेहो पुरुषक समान अधिकार भेटबाक चाहिअनि जाहि सँ ओ वंचित छथि। "ओना तँ साहित्यकँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि मुदा कोनो साहित्यक अनुशीलनसँ तत्कालीन समाजक अंग – प्रत्यंग प्रत्यक्ष भ' जाइछ। प्राचीन संस्कृतिमे नारीक स्थान कतय छल एकर ज्ञान तत्कालीन भारतीय साहित्य रुपी दर्पणसँ निरावृत्त होएत अछि।"[6]

मूलतः मानव समाजक विकास मातृ-सत्तात्मक परिवारसँ भेल जकर प्रमाण भारतीय साहित्यमे यात्रा – तत्र देखबामे अबैत अछि। आइयो मध्य आ' दक्षिण भारतक अनेक जातिमे मातृसत्तात्मक परिवारक प्रचलन अछि। एहि समाजमे लड़का विवाहक पश्चात् लड़कीक परिवारमे आबैत अछि। तेँ **'मातृ देवो भवः'** कहल गेल अछि आ' हमरा सबहक विवाहमे एखनहुँ मात्रीका पूजाकेँ स्थान देल गेल अछि। एहि प्रसंग लेखिकाक विचार – "आदिकालक समाज जाति – वर्णसँ विहीन छल। सम्पूर्ण जग ब्राह्मण छल कारण मानवक उत्पत्ति ब्रह्मा द्वारा मानल गेल। सभ्यताक विकासक संग – संग व्यक्तिक कर्मक आधारपर वर्ण विभाजन कएल गेल, आओर आगू जाक' पुरुष अपन वर्चस्व स्थापित करबाक लेल स्त्रीक बहुत रास अधिकारकेँ अपना अधीनमे कए लेलनि संगहि स्वयं कए स्त्रीकेँ रक्षक मानि लेलनि। एहि प्रकारेँ पितृसत्तात्मक परिवार दृढसँ दृढतर होइत गेल आ´स्त्रीक हिस्सामे रहि गेल त्याग, तपस्या, प्रजनन, सेवा, पूजा – पाठ ओ सहनशीलता।"[7]

ई कहब अत्युक्ति नहि होएत जे साहित्यकरलोकनि अपना सुविधाक अनुसारे स्त्रीक चरित्र – चित्रण कएलनि आ ' ओहि रुपे स्त्रीक लेल समाजक नियम बनल। एहि निबंधमे लेखिकाक कथन पूर्णतः सत्य छन्हि – " सर्वाधिक रहस्यमय त तखन बुझना जाईछ जखन एक ग्रंथमे ग्रंथकार लिखैत छथि –**'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'** ओहिमे दोसर प्रसंग लिखैत छथि – **'अस्वतंत्रः स्त्रीयः कार्या पुरुषेः स्वैदिवानिशम्।"**[8] लेखिकाक मनोव्यथा – "प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मनुक अनुसार स्त्रीगण काम, क्रोध, कपट, ईर्ष्या आओर दुशचरित्रत्ताक प्रतिमूर्ति होइत छथि। नारी मात्र आभूषण आओर शय्यासँ प्रेम राखैत छथि। मनु नारीकेँ निम्नकोटिक बुझैत छलाह तेँ ओकर तुलना शुद्रसँ कएलनि।"[9] एहि बातमे कोनो दू मति नहि जँ स्त्री सहीमे एतेक अविवेकी होइत छलीह तँ ' हुनकापर पारिवारिक दायित्व कोना छोड़ल जाइत छल? पुरुष – प्रधान समाजक ई संकीर्ण विचारधाराक परिणाम जे स्त्री स्वेच्छाचारिणी नहि होथि ; ओ पुरुषक नियंत्रणमे सेवा करथि। मनुस्मृतिक अनुसार स्त्री ओ पुरुषमे कोनो रुपेँ समानता संभव संभव नहि। दुनूक शारीरिक आ' मानसिक अंतर होएत अछि, पुरुषक प्रकृति उपार्जनक लेल एवं स्त्रीकेँ गृहकार्यक लेल।

एहिसँ ई बुझना जाइछ जे मात्र पुरुष सत्तात्मक समाज अपना केँ सर्वोपरि रखबाक लेल स्त्रीमे ततेक ने हीनभावना भरि देल जे स्त्री सहजहि अपनाकेँ हीन बुझय लगलीह। प्राचीन साहित्यमे विधवा – विवाह सेहो वर्जित छल। जँ कन्या बाल – विधवा भ' गेलीह तँ हुनका आजीवन अपन पतिक ध्यान क' ब्रहामचारिणीक जीवन जीवय पड़ैत छल, मुदा पुरुष पत्नीक मुइलापर ओ दोसर विवाह क' सकैत छथि जे एखनहु हमरा समाजमे देखल जाइत अछि। एहि तरहेँ देखल जाइत अछि जे प्राचीन ग्रंथमे स्त्री निन्दाक अभाब नहि। मनुस्मृतिक हजारो वर्षक पश्चात् जे रचनाकार भेलाह ओहो पूर्वाग्रहसँ वंचित नहि रहि सकलाह, चाहे ओ रामचरितमानसक रचनाकार तुलसिदासे किएक ने होथु। मानसमे सेहो विभिन्न स्थलपर स्त्री निंदा पराकाष्ठापर पहुँचि गेल अछि।

"ढोल, गवार, शुद्र, पशु नारी ।
सकल ताड़ना के अधिकारी ।।"[10]

एहि निबंधक माध्यम लेखक अपन विचार व्यक्त करैत छथि – साहित्यकार कए जखन युगस्त्रष्टा एवं युगद्रष्टा कहल जाइत छन्हि त' प्राचीन साहित्यकारक दृष्टिमे एहने युगक सृष्टि छलनि जाहिमे अपन सुविधाक लेल स्त्रीकैं निम्नतम कोटिमे राखल जाय। तें स्त्रीक मनोभावकैं ततेक ने दबा देल गेल जे स्त्री स्वयंकैं तदनुरुप सोचय आ' बुझय। ई सभ उक्ति आ ' प्रावधान सामाजिक संक्रमण कालक अछि। मातृसत्तात्मक प्रथा कैं तोडि पुरुषलोकनि पितृसत्तात्मक प्रथाकैं स्थापित करबाक लेल अपना हिसाबे नियम बनाओल।

बौद्ध कालमे नारीक स्थिति प्रशंसनीय आ सुव्यवस्थित छल। ओहिकाल मे महिला मन्त्र, वेद आ गायत्री पढैत छलीह। एहि तरहें बाल्मीकि रामायण, भवभूतिक उत्तर रामचरित आ 'भामती' मे स्त्रीक उच्च शिक्षाक चर्चा भेल अछि। हर्षक विषय अछि जे आधुनिक भारतीय समाजक दृष्टिकोण बदलि गेल अछि। शिक्षित परिवार मे स्त्रीक प्रति अमानुषिक व्यवहार मे कमी देखल जा रहल अछि मुदा पूर्णतः भेदभाव समाप्त नहि भेल। स्त्री लोकनिक कार्य करबाक अवसर आ अधिकार देल जाईत छन्हि मुदा एखनहूँ बहुत भारतीय परिवार एहन अछि जे एहि दिशा मे बहुत पछुआएल छथि। स्त्रीकैं अधिकार देबाक सम्बन्ध मे हमर मत ई अछि जें स्त्रीकैं लोक आधुनिक भारतीय समाजक वस्तु मानैत छथि। जकरा अपना रुपें उपभोग करैत छथि आ अपन पितृसत्तात्मक समाजक वर्चस्व बनौने छथि। भारतीय संविधानमे त नारीकैं पुरुषक समान अधिकार भेटल छन्हि, मुदा वर्तमान नारी समुदाय ओहि प्रत्याशा मे छथि जहिया पुरुष समाज ओकरा भोगक वस्तु नै बुझि समाजक प्रमुख अंग मानत। अंतमे लेखिकाक भाव छन्हि जे जहिना महिला समाजक प्रत्येक क्षेत्र मे अपन ज्ञान आ विश्वासक संग प्रवेश क रहल छथि तहिना समाजिक दानवसँ सुरक्षा लेल सेहो अपन शारीरिक शक्ति आ कौशलक विकास करक चाहिअनि। तखनहि बेसी सशक्त भ'सफलताक सीढी पर चढ़ब आसान होएत। एहि प्रकारें **'समाजक सशक्तिकरणमे मैथिल महिलाक योगदान'** निबंध मे कोनो समाजक निर्माण स्त्री पुरुषक सहयोग पर निर्भर करैत अछि आजुक जे बुद्धिजीवी समाज अछि ओ स्त्री के अपन एक अभिन्न अंग मानैत छथि आ मैथिल स्त्रीक शक्ति सहभागिता भुत, भविष्य आ वर्तमान तीनू काल मे स्पष्ट परिलक्षित होईत अछि। देवीक प्रतिरुप स्त्रीकैं मानल गेल अछि। प्राप्त साहित्यक आधार पर शिक्षित मैथिल महिलाक सामाजिक योगदान वैदिक कालहिसँ भेटैत अछि। प्राचीनकालक विदुषी भारती क नाम लेल जा सकैछ जे अपन पति मंडन मिश्रके शंकराचार्य संग पराजित होईत देखि अपन पतिक स्थान लए शंकराचार्य कैं पराजित कए मिथिला कैं यशस्वी बनओने रहथि। साहित्यक अनुसार भारती अनेक शास्त्रक ज्ञाता छलीह। मैथिल समाजकैं अपन ज्ञान सँ प्रकाशित करयवाली विदुषी मे गार्गी, मैत्रयी, अहिल्या, लखिमा आदिक नाम आदरसँ लेल जाईत अछि।

स्त्रीक शिक्षाक ह्रास मुगलकालक आगमनसँ भेल। ओहि समय स्वछंद जीवन व्यतीत करैत मैथिल महिला पर मुगलक कुदृष्टि परि गेल जाहि कारण परदा करब अनिवार्य भ' गेल मुदा आँगन – घरक भीतर रहियो क मैथिल महिला अपन सभ्यता ओ संस्कृतिकैं लुप्त नहि होमय देलनि। गीत – नाद, अरिपन -पुरहर, जनऊ, चित्रकला आओर विकसित भेल। अंग्रेजक आगमनक पश्चात् मुग़ल राज्यक अंत भेल। अंग्रेज स्वयं स्वछंद प्रवृतिक छलाह ताहि हेतु हुनक काल परदा प्रथा नहि छल। क्रमशः सम्पूर्ण भारतक संग मैथिल महिलाकैं सेहो पुनः शिक्षाक अवसरि भेटलनि। लेखिका लिखैत छथि- "वर्तमान शताब्दीमे विकासक एहन कोनो क्षेत्र नहि बाँचल अछि जतय मैथिल महिलाक प्रवेश नहि होय। चाहे ओ राजनीतिक क्षेत्र हो वा शिक्षा जगत, समाजसेवा हो वा

प्रसाशन, खेल, साहित्य हो वा कला। प्रसाशनक क्षेत्र मे पहिल आइ .पी .एस 1990 मे मैथिल महिला पदाधिकारी श्रीमती अनुराधा शंकरक नाम आबैत अछि। तहिना शिक्षा जगतमे पहिल मैथिल महिला कुलपति प्रो. डॉ. ललिता सिंहक नाम सादरसँ उल्लेखनीय अछि। साहित्यक क्षेत्रमे एहन सैकड़ो महिला छथि जिनकर लेखनी समाज, साहित्य वा संस्कृति पर अपन अमिट छाप छोड़ने अछि।"[11] हिनक दृष्टिएँ उच्च वर्गक महिला जँ सफलताक आकाश पर छथि तँ मध्यमवर्गीय महिला अर्थोपार्जन कए अपन पारिवारिक, सामाजिक स्तर बढा रहल छथि, संगहि निम्नवर्गीय महिला कम प्रशंसाक पात्र नहि छथि। एहि वर्गक आजीविका साधन मुख्य रुपसँ मजदूरी छैक। हालांकि हिनका पुरुष मजदूरक अपेक्षा आधा मजदुरी भेटैत छन्हि, शारीरिक शोषण कएल जाएत छन्हि तथापि अपन पारिवारिक परिचर्या करैत छथि।

एहि तरहेँ समाजक सशक्तिकरणमे मैथिल महिलाक महत्वपूर्ण योगदान अछि। जँ एहि सत्य कए स्वीकार कए हमर समाज महिला विकास आ' सहयोगकेँ अपरिहार्य मानि क' चलत त' आधुनिक समाजक भविष्य सेहो स्वर्णअक्षरमे लिखल जाएत।

तहिना **'बेटी सृजन आ संघर्षक रुप'** निबंधमे बेटी सृजन आ' संघर्ष रुपमे दिन – प्रतिदिन आगू बढि सशक्त रुपेँ ठाढ़ भ रहल छथि। हिनक उत्साह देखि लेखिकाक मोन गदगद भ जाईछ मुदा जखन कोनो बेटी मोन उदास कएने कहैत अछि – "हम आगू नहि पढि सकब कारण पिताजीक कहब छन्हि जे बेटीक उच्च शिक्षा हमरा लेल विपत्ति होयत तखन करेज कचोटैत अछि।" बेटीकेँ जनमहिसँ संघर्ष करए पड़ैत अछि कारण हमर समाज बेटीकेँ जन्म भेलासँ ओकरा अभागलि मानि ओकर अवहेलना करैत छथि। लेखिकाक कथने – "वास्तविकतासँ समाज वंचित छथि जखन कि प्रायः प्रत्येक शिक्षित व्यक्तिकेँ ई जानकारी अवश्य छन्हि जे बेटा बेटीक जन्म पति – पत्नीक क्रोमोजोम्सक मेलसँ होइत अछि। महिलाक क्रोमोजोम्स XX वा पुरुषक XY क्रोमोजोम्सक मिलनसँ बेटाक उत्पत्ति होएत अछि। जाहि पुरुषमे Y क्रोमोजोम्स कमजोर रहैत अछि ओतय बेटाक उत्पत्ति नहि होइत अछि। अधिकाँश पुरुष अपन दोष नहि मानि सभ दोषारोपण स्त्रीपर द दैत छथि। वास्तविक रुपेँ ई क्रोमोजोम्सक मिलन एक संयोग रहैत अछि एहि लेल ककरो दोषी नहि मानबाक चाही।"[12]

आदिकालहिसँ हमरालोकनिक समाज पितृसत्तात्मक रहल अछि। शारीरिक संचरनामे पुरुष स्त्रीसँ बलशाली होइत छथि जाहिसँ पुरुषवर्ग अपना कए महिला संरक्षकक पद प्राप्त क' लेलनि जकर उपभोग एखन तक क' रहल छथि। मुदा "मुख्य रूपसँ बेटी जेना जन्महिसँ संघर्ष करैत एहि धरतीपर आबैत छथि जँ हुनका प्रोत्साहन देल जाय, उचित शिक्षा देल जाय त' बौद्धिक क्षमतामे बेटासँ कनियो पाछू नहि रहत। एकर प्रमाण प्रत्येक क्षेत्रमे भेटैत अछि। एकैसम शताब्दीमे बेटीक संघर्षसँ पिताक दृष्टिकोण बदलल अछि। बेटीकेँ सक्षम बना ओकरा अपना पएरपर ठाढ़ करबाक महत्ता बुझबामे आबए लागल छन्हि। जाहि बेटीकेँ एकर अवसर भेटल त' ई सर्वविदित अछि जे बेटाक अपेक्षा बेटीमे बहुमुखी प्रतिभा देखल जाइत अछि।"[13] कहल जाइत अछि जे एकटा शिक्षित पुरुष स्वयं तक शिक्षित रहैत अछि मुदा एक शिक्षित महिला पूरा परिवारकेँ शिक्षित करैत अछि। एहि रचनामे लेखिका स्त्रीक संघर्षकेँ व्यक्त करैत छथि जे अपन क्षमताक ललकारकेँ स्वीकारैत महिलालोकनि सृष्टि संवर्धन लेल नेनाक जन्म, लालन – पालन, पारिवारिक दायित्वक निर्वाह सेहो क' रहलि छथि। हिनक व्यथा स्त्री – विमर्शक एहि बातसँ झलकैत अछि जे एतेक धैर्य आ' साहसीक जीवन अपनौलाक बादो पितृसत्तात्मक समाज बोझ किएक मानैत अछि ?" महिला जीवनक सार्थकताक परिणति मात्र विवाह किएक ?[14]

अंतमे लेखिका कहैत छथि बेटा हो कि बेटी दुनूक सर्वागीण विकासक लेल समान संरक्षण आ' सहयोग आवश्यक होइत अछि। आवश्यकता अछि जे बेटीकेँ सामाजिक, शारीरिक आ मानसिक दंशसँ बचेबाक। जँ स्त्रीकेँ देवी रुपसँ मुक्त कए देल जायत, जँ सर्वागीण रुपँ ओकरा विकसित होमय देल जाइत तँ ओ सृष्टिक सृजन करती, संरक्षिका आ धरती कए स्वर्ग बनाबएवाली स्वयं सिद्धा साबित हेतीह।

एहि तरहें एक रचना अछि **'आधुनिक मैथिली कथामे नारी'**, जाहिमे नारीक महत्वपूर्ण योगदानक चर्चा कयलनि अछि। अंग्रेजी शिक्षाक जखन विकास भेल त' लेखकलोकनिक मानसिकतामे सेहो परिवर्तन भेल। समाजमे पसरल अराजकत, व्यभिचार, शोषनक विरुद्ध कलम उठल। बाल – विवाह, विधवाक शोषण, नारी अशिक्षा पर लेखकलोकनिक ध्यान गेल। आ' ओ एहि सभ विषयकेँ अपन लेखनीक माध्यमसँ नारीक चित्रण पर प्रकाश देबाक प्रयास कयलनि।

प्रो. हरिमोहन झा (1908 – 1984) आधुनिक आ' मध्यकालक संक्रमण कालक लेखक कहल जाइत छथि । हिनक उपन्यास **'कन्यादान'** ओ **'द्विरागमन'** प्रासंगिक अछि । एहिमे लेखक समाज सुधार, नारी शिक्षा, सामजिक विडंबनाक चर्चा नायिका बुच्चीदायक माध्यमसँ कयलनि । एकर अतिरिक्त हिनक **'ग्रेजुएट पुतहु'** (1960), **'ग्राम सेविका'** (1960) , सेहो नारीक प्रति तत्कालीन भाव तथा नारी शिक्षाक महत्व पर प्रकाश दैत अछि । नारी -पात्रक चित्रणमे सफलतम नाम यात्री जीक सेहो छन्हि । हिनक दू टा उपन्यास **'पारो', 'नवतुरिया'** तत्कालीन लेखककेँ नारी – भावकेँ पाछू छोडि देलक । एकर अतिरिक्त राजकमल चौधरीक नाम सेहो नारी पात्रक चित्रणमे अग्रणी श्रेणीमे राखल गेल अछि । हिनक 1980 मे तेरह गोट कथा – संग्रह प्रकाशित भेल। हिनक एक कथा – संग्रहक कथा **'ललका पाग'**, जाहिमे नायिका तीरुकेँ बाल्यावस्थामे विवाहक पश्चात् सासुर अयलापर पोखरिमे हेलबाक कारणेँ चर्चाक पात्र बनि जाइत छथि। हिनक पति जखन दोसर विवाहक लेल तैयार होइत छथि त' तिरु विवाह वाला पाग पतिक माथपर द' देलनि। तिरुक प्रेम, त्याग, तपस्यासँ द्रवित भ' राधा जे हुनक पति छथि ओ कानय लगलाह। राजकमलक ई रचना, सब कथासँ भिन्न आ' सर्वोत्कृष्ट रचना मानल गेल। एहि तरहें राजकमल चौधरीक अधिकांश कथा – नायिकामे अतृप्त यौन पिपासा, बेमेल विवाहक कारण वैधव्य आ' नारीक असहनीय वेदना, सामाजिक शोषणक चित्रण भेटैत अछि। तहिना प्रभास कुमार चौधरी (1941 – 1998) एक सशक्त ओ चर्चित लेखकक रुपमे विख्यात भेलाह। समकालीन साहित्यमे अनेको लेखकक कथा अछि जे शिक्षाक प्रचार – प्रसारक संग आधुनिक आ' आत्मविश्वाससँ भरल महिलाक व्यक्तित्वक चित्रण कएने छथि। साहित्य अकादमीसँ पुरस्कृत श्रीमती लिली रे' क कथा **'रंगीन पर्दा'** जाहिमे अनमोल विवाह आ' बाल्यावस्थाक परस्पर मधुर भाव, सासु – जमायक संबंधक अछैत दुनुमे अनुचित शारीरिक सम्बन्ध जोडि दैत अछि, जाहिसँ पाठकक बीच खलबली मचि गेल।

मैथिली साहित्यमे डॉ. शेफालिका वर्मा एक सशक्त आ' प्रतिष्ठित हस्ताक्षर छथि। साहित्यक दुनु विधा गद्य आ' पद्यपर हिनक समान पकड़ छन्हि। एकर अतिरिक्त डॉ. नीरजा रेणु, डॉ. उषा किरण खान सँ महती लेखिका अपन अधिकाँश कृतिमे नारीकेँ केन्द्रित क' लिखने छथि। एहिना सन मैथिली साहित्यमे नारी लेखिका छथि नीता झा, जनिक लेखनसँ सामाजिक परिवर्तन भेल। डॉ. नीता झाक कथा सभ सेहो बहुआयामी अछि। हिनक लेखनीमे नारी हृदय – वेदना आ कचोट अछि। मैथिली साहित्यक अन्य चर्चित लेखिकामे डॉ. बिभा रानी जनिक रचनामे समाजक विद्रुपताक वर्णन भेल अछि। एहि निबंधमे लेखिकाक

कहबाक सारांश – "जहिना सृष्टिक आरम्भ स्त्री पुरुषक सहयोगसँ भेल, समाजक गाडी बिना दुनूक सहयोग संभव नहि।"[15] अर्थात आजुक साहित्यक लेखक – लेखिका उन्नत्तिक दिशामे समान रूपसँ एक – दोसरक आवश्यकता अछि।

तहिना एकटा निबंध **'मैथिली नाटक एवं कलकताक अवदान'** मे मैथिली नाटकक उद्भव ओ विकासक प्रक्रिया कए विस्तारपूर्वक निबंधक माध्यमे प्रस्तुत कएलनि अछि। मैथिली नाटकक प्रारंभ काल 13म शताब्दी मानल गेल जे विद्यापतिसँ प्रारंभ भ' हर्षनाथ धरि एकसँ एक मैथिली नाटकक रचना भेल। जकरा मैथिली साहित्यक मेरुदंड कहल जा सकैछ। मैथिली नाटकक अवदानमे जाहि नाटककारक सहयोग भेल अछि ओहिमे किछु नाम द्रष्टव्य – गोविन्द झा, आनंद झा, ईशनाथ झा, त्रिलोकनाथ मिश्र आदि जनिक नाटक बेस ख्याति पओलक।

मैथिली नाटकक आधुनिक रूप कलकता मे तैयार भेल। आधुनिक रंगमंचक समुचित विकासमे प्रबोध नारायण सिंह, सीताराम चौधरी, श्रीकांत मंडलक विशेष योगदान अछि। मैथिलीमे नाटक बहुत बेशी लिखल गेल मुदा अधिकांश नाटकमे नाटकीयताक अभाव रहल। अंततः इएह कहल जा सकैत अछि जे मैथिली नाट्य साहित्यक विकासमे कलकताक महत्वपूर्ण आ' प्रेरणादायक योगदान रहल।

तहिना **'फैशन एक आवश्यकता'** निबंधमे लेखिका फैशनकेँ एक विशेष आवश्यकता मानैत छथि, ताहि विमर्शपर विचार व्यक्त कयलनि अछि। आजुक समय चाहे बच्चा पाँच वर्षक हो अथवा दस – बीस वर्षक। सबकेँ आधुनिक फैशन चाहियनि। बच्चाकेँ एकर चिन्ता नहि होइत छन्हि जे हुनकर माँगक पूर्ति लेल माता – पिता सक्षम छथि वा नहि। प्रत्येक लोकक इच्छा रहैत अछि जे ओ सामान्यसँ अलग लागए। लोकक ध्यान ओकरा पर केन्द्रित होय।

लेखिका लिखैत छथि – "फैशनक पाछु मनोविज्ञान काज करैत अछि। फैशनक माध्यमसँ लोक अपना दोष कए नुकएबाक प्रयास करैत छथि।"[16] प्रत्येक व्यक्तिक इच्छा रहैत अछि जे देखबामे ओ सुन्दर ओ आकर्षक लागय। एहन मनोभावसँ फैशनक प्रचार – प्रसार होइत अछि। आधुनिक कालमे फैशन त' एतेक प्रचलित भ' गेल जे औद्योगिक संगठन आ' सरकार नीक डिज़ाइनरकेँ प्रोत्साहन आ' पुरस्कार द' रहल अछि।

एकटा आओर निबंध **'धिया – पुताकेँ फूसी बाजब'** मे बच्चाकेँ फूसी बजबाक प्रक्रिया कए परिवार आ' समाज हल्लुकमे ल' लैत छथि जखन कि कखनोकेँ नेनाक फूसि बाजब बहुत पैघ समस्या ठाढ़ क' देत अछि। एहि निबंधकेँ मनोविज्ञानसँ जोड़ैत एहि बातपर विशेष बल देलनि कि जँ फूसि बजबाक कारण ज्ञात भ' जाए त' हुनका फूसि बजबासँ बचाएल जा सकैत अछि, प्रायः बच्चा बदलाक भावनासँ प्रेरित भ' फूसि बजैत छथि। एहेन परिस्थितिमे श्रेष्ठ परिजनकेँ चाहियनि कि ओ बालक कए बुझाबथि जे फूसि बजलासँ कोनो लाभ नहि होइत अछि बल्कि एहिसँ व्यक्तिक ह्रास होइत अछि।

मनोवैज्ञानिकक अनुसार बच्चाकेँ भय फूसि बजबाक लेल विवश करैत अछि। एहनमे आवश्यक अछि जे अभिभावक पहिने बच्चाक मोनसँ भय दूर करबाक प्रयास करथि अर्थात बच्चामे विश्वास उत्पन्न करक चाही जे झूठ स्वीकार कएलापर कोनो प्रकारक दंड नहि देल जेतनि। लेखिका कहैत छथि – "एक सफल एवं सुसंगठित व्यक्तित्वक विकासक लेल नेनाकेँ फूसिसँ बचेबाक नितांत आवश्यकता अछि। तखनहि हुनक व्यक्तित्वक विकास भ' सकत।"[17]

तहिना **'कामकाजी महिला : सुविधा – असुविधा'** निबंधमे नारी – विमर्शपर चर्चा कयलनि अछि। मध्यमवर्गीय नारी जे सुच्चा गृहिणी छथि तँ ओ भोरसँ राति धरि कोना अपसिआँत रहैत छथि, एको

क्षणक पलखति नहि। हुनक दिनचर्यामे चौबीसो घंटाक ड्यूटी रहैत छनि तथापि ओ कामकाजीमे नै गिनाइत छथि, बल्कि कामकाजी महिलाक श्रेणीमे ओ महिला वर्ग आबैत छथि जे घरसँ बाहर कोनो कार्यालय वा संस्था आदिमे काज करैत छथि। पहिले'के समय एहन छल जतय बेटीक उच्च शिक्षा देबाक लेल अभिभावक तैयार नहि होइत छलाह कारण जे नीक घर – बर तकलापर विवाहमे तिलक कोना देब? मुदा आजुक बदलैत समयमे उच्च शिक्षित पुरुषसभ चाहैत छथि जे हुनक सहगामिनी शिक्षित होथि आ' हुनका संग हाथ मिला क' चलि सकथि।

कामकाजी महिलाक दुर्दशाक जँ वर्णन कएल जाय त' सुच्चा गृहिणीसँ बेसी उत्तरदायित्व हुनका उपर रहैत अछि कारण कार्यक उत्तरदायित्व त' हुनका रहितहि छन्हि संगहि नोकरीक अतिरिक्त भार सेहो ओतबे प्रसन्नतासँ निमाहैत छथि। एहि प्रकारेँ हिनका बहुत सुविधा – असुविधा भेटैत छन्हि। एतेक दिक्कतक बादो जँ पारिवारिक सहयोग कामकाजी महिला कए रहैत छन्हि त' ओ उच्चतम शिखरपर पहुँचबाक लक्ष्य पूर्ति अवश्य करैत छथि।

तहिना **'विद्यार्थी ओ अनुशासनहीनता'** निबंधमे लेखिका विद्यार्थीक परिभाषा एवं अनुशासनक अर्थ आत्मनियंत्रण एवं आत्मनिर्देशक विकासपर जोर देलनि। आजुक युगमे अनुशासनहीनता एकटा विकराल रूप लेने जा रहल अछि। एहि तरहक अनुशासनहीनतासँ बचबाक लेल जँ छात्रक बुद्धि – लब्धि आधारपर वर्गीकरण कएल जाय त' किछु अंशमे सफलता भेटि सकैत अछि। **'हीनभावना एवं तकर निदान'** मे लेखिका लिखैत छथि – "मनोवैज्ञानिक अध्ययनक अनुसार प्रत्येक व्यक्ति कोनो न कोनो तरहेँ हीनभावनासँ ग्रस्त रहैत छथि। व्यक्तित्वक विकासमे हीनताक भावनाकेँ महत्वपूर्ण स्थान होइत छैक।"[18] प्रत्येक क्षेत्रमे उच्चतम स्थान सीमित रहैत अछि आ' प्रत्याशी अनेक रहैत छथि। जिनका उच्चतम स्थान प्राप्त भ' जाइत छन्हि हुनका देखि प्रत्याशी कए कचोट भ' जाइछ। बहुतो परिवारमे बेटी कए हीनताक भावनासँ देखल जाइछ। कारण परिवार आ' समाजक ई मान्यता छैक जे वंश तँ बेटासँ बढ़त, ओकरे देल मुखाग्निसँ मुक्ति भेटत। जखन कि बेटाक अपेक्षा बेटीमे माता – पिताक लेल सेवा – भाव व सहृदयता बेसी देखल जाइछ। संभवतः पुरान विचारधाराकेँ बदलबाक प्रयासमे महिला घर – बाहर दुनु ठाम अपन सक्षमता साबित करैत छथि।

'आत्महत्या मानसिक विकृति' मे लेखिका आत्महत्याक परिभाषा दैत कहैत छथि –"ई एक आत्मप्रेरित मृत्यु जाहिमे व्यक्ति अपना जीवन कए समाप्त करबाक प्रत्यक्ष, चेतन आ जानि बुझि कए प्रयास करैत अछि।"[19] जखन कोनो व्यक्ति अपमानजनक वातावरणसँ घेराए जाइछ तँ ओकरामे ई भावना प्रबल भ' जाइत अछि जे ओ एहिसँ छुटकारा नहि पाबि सकैछ त' आत्महत्याक प्रयास करैत अछि। मनोवैज्ञानिक शोधक अनुसार 30 -70 प्रतिशत आत्महत्या करयवाला व्यक्ति कोनो ने कोनो मानसिक विकृतिसँ पीड़ित रहैत अछि। आत्महत्या कए रोकथामक लेल पारिवारिक सदस्य, मित्र, सहकर्मी कए सचेष्ट रहबाक चाही तखनहि एहि घटनाकेँ रोकल जा सकैछ। आत्महत्याक प्रयास करयवाला व्यक्तिकेँ चिकित्सीय देखभाल हेबाक चाही। एकरा सम्बन्धी कारण, उपचार, रोकथाम, व्यवहारिक आ साहित्यिक जानकारी होएब सेहो आवश्यक अछि।

एक आओर निबंध **'बाल अपराध सामाजिक अभिशाप'** मे आजुक समयक बाल अपराध जेना किशोरावस्थाक बालक – बालिका संलिप्त हेबाक विवरण, चोरी, हत्या, अपहरण, यौन, हिंसा आदि भ' रहल अछि ताहि विषयपर हमरासभकेँ गंभीर चिन्तनक आवश्यकता अछि। एहि रोगक उपचार थिक रोकथाम जे मुख्यतः परिवारसँ समाज आ' विद्यालयसँ एहिपर अंकुश लगेबाक प्रयाससँ एहि रोग कए दूर कएल जा

सकैछ।

एक महत्वपूर्ण निबंध **'भ्रष्टाचारः कारण ओ निदान '** लिखलनि जाहिमे भ्रष्टाचारक परिभाषा जकर परिधिसँ कोनो क्षेत्र बाँचल नहि अछि। प्रत्येक युगमे भ्रष्टाचार एक ज्वलंत समस्या रहल अछि मुदा वर्तमानमे अनेको कारणवश ई विकराल रूप ल'लेलक अछि। एकरा समाप्त करबाक लेल प्रशासनक सख्ती आ' चुस्ती दुनूक आवश्यकता अछि। हमरा सभ कए मिलि एकरा रोकबाक लेल अथक प्रयासक जरूरत अछि।

तहिना **'भूत – प्रेतक अस्तित्व : मनो – सामाजिक विशलेषण'** मे समाजमे अन्धविश्वासक महाजाल पिछड़ल, प्रगतिशील, शिक्षित, अशिक्षित सभकेँ प्रभावित क' लैत अछि। हमरासभकेँ एहि अन्धविश्वाससँ मुक्त होयबाक आवश्यकता अछि।

एहि निबंध – संग्रहक सभसँ अंतिम निबंध **'नारी लेखनक कथा – दिशा'** अछि जाहिमे नारीक भूमिका साहित्यिक रचनामे कोन तरहेँ भेल अछि तकर विस्तृत वर्णन भेल अछि। नारी अपन संस्कृतिकेँ अक्षुण रखबाक लेल जे संघर्ष कएलनि तकर चर्चा भेल अछि।

उपसंहार : निष्कर्षतः डॉ. पन्ना झाक रचनाक **'अनुशीलन'** पढ़लाक उपरान्त हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छी जे हिनक सभटा निबंध किछु ने किछु नव अनुभव सिखबैत अछि। हिनक रचना मुख्य रूपसँ नारी – विमर्श पर आधारित अछि। एकर अतिरिक्त साहित्य – विमर्श, ज्ञान – विज्ञानक विस्तारपूर्वक विशलेषण हिनक रचनाक मुख्य उद्देश्य अछि। लेखिका जाहि प्रकारेँ नारीक व्यथाक वर्णन निबंधक माध्यमे कयलनि ताहिसँ स्पष्ट बुझना जाइछ जे सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्थासँ हिनक ह्रदय द्रवित भेल अछि ; कारण कोनो रचनाकारक रचना तत्कालीन समयक परिदृश्य होइत अछि। लेखिका सामाजिक कटु सत्यता कए **'अनुशीलन'** निबंध – संग्रहमे भयमुक्त भ' लिखलनि। महिला होयबाक कारणेँ महिलाक विकास, योगदान आ पीड़ासँ व्यक्तिगत रुपेँ पीड़ित होइत छथि जे हिनक निबंध पढ़लासँ स्पष्ट बुझना जाइछ।

संदर्भ संकेत :-

1. झा पन्ना, अनुशीलन, दू आखर, पृ.–05.
2. उपरिवत, पृ.-07.
3. झा पन्ना, अनुशीलन, पृ.–11.
4. उपरिवत, पृ.-13.
5. उपरिवत, पृ.-15.
6. उपरिवत, पृ.-16.
7. उपरिवत, पृ.-17.
8. उपरिवत, पृ.-17.
9. उपरिवत, पृ.-17.
10. उपरिवत, पृ.-17.
11. उपरिवत, पृ.-26.
12. उपरिवत, पृ.-29.
13. उपरिवत, पृ.-30.
14. उपरिवत, पृ.-31.
15. उपरिवत, पृ.-41.
16. उपरिवत, पृ.-61.
17. उपरिवत, पृ.-65.
18. उपरिवत, पृ.-80.
19. उपरिवत, पृ.-83.

•